33. "नियति / Predestination"

प्रत्यक्ष समय में केवल एक इलेकट्रिक क्रिमेशन ही अच्छा - हैल्थी उपाय विशेष हैं प्रकृति तथा मनुखता के लिये - बिना धार्मिक फिलथी (filthy) कर्म-काण्ड़ो के - ऐसा गहराई से सोच तथा निरन्तर ध्यान रख कर मर्यादित व्यवहार विशेष कर " हे मानुख जन्म दुर्लभ में अवतरित हुई आत्मा विशेष " .....! तेरी " नियति " केवल अपने निजी घर विशेष तक पहुंचने हेतु ही एक दुर्लभ निरन्तर प्रयास विशेष हैं - ये व्यवहार तेरे से कब छिन

जायेगा ये कोई भी नहीं जानता .....! बड़े-बड़े भविष्यवक्ता भी केवल महामूर्ख ही साबित होते आये हैं घोर महाआनन्त काल से .....! यह व्यवहार तुझे अपनी जिम्मेदारियों को पूरी इमानदारी से निभाते हुऐ अपने फर्ज को निभाना हैं ।

अब " संग्राहिता " का पूरी तरह से त्याग कर - तुझे केवल बांटने की ही सीख लेनी हैं - इस बाकी के बचे हुऐ आवश्यक सफर विशेष में । जो भी तूने संग्रह विशेष-विशेष किया हैं किन्ही भी तरिको-विशेषो-वगैरह-वगैरह से - उन सब की नियति निश्चित हैं " अच्छी अथवा बुरी " जान ले यह केवल निश्चित विशेष ही हैं - जो तुझे बड़े चाव से भोगनी अथवा भुगतनी विशेष हीं हैं - अभी या फिर कभी - अनन्त काल हेतु - कैसे भी - किन्ही भी प्रकारों से - अटल हैं ना ज्यादा न कम केवल तुझे ही सभी जानकारो - सम्बंधो सहित व्यवहार संगो अनुसार .....! इस में दखल विशेष केवल असम्भव ही हैं । किसी भी प्रकार-समर्था-साधन-शक्ति अथवा प्रभु ही क्यों ना हो क्योंकि प्रभु की सत्ता ही नियत रूप से नियति विशेष निश्चित अन्नत काल हेतु .....!

तेरे सफर में रूकावट केवल तेरी अपनी ही माया-ममता मोहनी के रूप में सदा लगातार विधमान विशेष हैं । इस मोहनी के रूपजाल से केवल मनुखता को कमा कर के ही बचा जा सकता हैं जो स्वंय को पूरी ईमानदारी से अपने "

मूल आधार " को समर्पित विशेष कर के ही संम्भव हैं - जिस का कोई भी रूप-रंग-नाम-आकार विशेष नहीं हैं .....! अगर कुछ हैं तो केवल तू स्वंय ही हैं जो उस विशेष के सिवा और कुछ भी नहीं हैं - इसलिये उसे केवल और केवल अपने अंदर में ही देख-खोज़ यही तेरी नियति विशेष हैं .....! और तुझे किस नये-नये तरीको विशेषो से उसे इस दुर्लभ मानुख सफर विशेष में बाहर जप-तप-संयम-तीर्थ-वर्त-नेम इत्यादि - वगैरह-वगैरह में ढूढंता - खोजता पाखंड़ कमाता - मृत्को को पूजता-ध्यान-किर्तन करता-गाता अपने अनोखे दुर्लभ सफर से पथ भृष्ट होता जा रहा हैं .....! ये दुर्लभ मोका विशेष तो तू खो ही चुका हैं फिर कब अनन्त कल्पो बाद तुझे मिलेगा ये कोई नहीं जानता - घौर महा अनन्त जोनियो भयावहो में बार-बार मर-जी कर तू तड़पता हुआ इस मौके को मांगता केवल तड़पता ही रहेगा .....! यही नियति तूने अपनी मर्ज़ी से कमाई हैं - विचार कर बड़ी-बड़ी चालाकियों से हासिल किया हैं .....! अब केवल दुआ कर अपने भले हेतु - " एक ओंकार सतिगुर प्रसादि - तेरे भाणे सर्बत दा भला " ।

1. " कर्म - धर्म पाखण्ड़ जो दी सैह -
तिन जम - जगती लूटेट ।
निर्बाण कीर्तन गावोह करते का -

निमख सिम्रित – जित छूटैह .....! ”

निर्बाण किर्तन (बिना रूके निरन्तर स्वंय से उत्पन्न-प्रत्यक्ष) = ➡ नाम – अमृत – वड़ – नाद – राग – ताओ – लागौस – कल्मा – शब्द – ज्ञान – तीर्थ – वाणी – गुरू – धुन – सतगुरू इत्यादि वगैरह – वगैरह “ साचा तीर्थ नाम हैं – नाम शब्द विचार अन्तर ज्ञान हैं .....! ” =➡ एक दुर्लभ अनोखी – घौर महाअनन्त रागों विशेषो से ओतप्रोत – महाअनोखी चमकिले चकाचौंध कर देने वाले प्रकाशो विशेषो को प्रत्यक्ष करती – मदमस्त कर देने वाली अनोखी सु-सुगंधों से भरपूर घौर महासमर्थ आवाज़ विशेष हैं .....! प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप से A to Z भूत – प्रत्यक्ष – भविष्य को अनुभव करवाती – निरन्तर सब कुछ निरन्तर हज़्म विशेष करती जा रही हैं .....! जो ना तो ली जा सकती हैं – ना ही दी अथवी बांटी जा सकती हैं क्योंकि “ मूल अथवा यह ” केवल स्वंय को ही निरन्तर प्रत्यक्ष करती – स्वंय को ही निरन्तर अपने ही अंतर निज़ ध्यान विशेष में लीन जप – अथवा ध्यान विशेष कर रही हैं ....!

फिर सोचो तुम कैसे स्वंय के अधूरे – निकृष्ट कर्म – काण्ड़ रूपी ऊपायो विशेषो से उस तक पहुंचना तो एक तरफ रहा – उसे आंशिक रूप से केवल जान भी विशेष सकते हो .....?

- "ज्ञान न गल्ली ढूंढ़िये – कथना करड़ा सार.....।
- नाम के धारे खण्डं ब्रह्मण्ड .....।
- शब्दे ही ते सब कुछ होआ.....।
- शब्द गुरू सुरतधुन चेला.....।
- वाणी गुरू – गुरू हैं वाणी – विच वाणी अमृत सारे ।
- अंतर ज्योति निरन्तर वाणी – साचे साहिब सिऊ लिव लाई ।
- गुरवाणी कहे सेवक जन माने प्रतख गुरू निसतारे (केवल रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष).....?
- अमृत हरि का नाम हैं – देही में इस का विश्राम .....! "